The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 4 | April 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय हस्तलिखित परंपरा की विरासत

योगेश साहेबराव पाटील
शोध छात्र, क. का. सं. वि, रामटेक
Email : yogeshpatil240695@gmail.com

प्रा. पराग जोशी
साहित्य विभाग प्रमुख, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक.

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 19-04-2025

Published: 10-05-2025

Keywords:
हस्तलिखित, विरासत, परंपरा, सभ्यता।

ABSTRACT

भारत विभिन्न परंपराओं का देश हैं तथा ज्ञान का भंडार है।इसमें विभिन्न परंपरा शामिल है।जैसे-दार्शनिक, आध्यात्मिक, गुरुकुल, सामाजिक इत्यादी।इसीमे एक अपूर्व और अद्‌भुत है- भारतीय हस्तलिखित परंपरा। भारत के पास पुरे विश्व में हस्तलिखितों का सबसे बडा संग्रह है।ये हस्तलिखित पचास लाख से अधिक है,जिससे भारत विश्व में हस्तलिखित धन का सबसे बडा भंडार बन गया है। हस्तलिखित ग्रंथ भारत की शानदार विरासत माने जाते है। ये हस्तलिखित विभिन्न लिपियों तथा भाषाओं में उपलब्ध है। ये लिखित दस्तावेज विभिन्न भारतीय सभ्यताओं के विषय में जानकारी प्रदान करते है। इनमें विभिन्न विषय,शास्त्र,पौराणिक कथा,संगीत, नृत्य, नाटक इत्यादि समाहित हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों का मुख्य उद्देश्य अतिप्राचीन परंपरा का संरक्षण है। ताडपत्र, भोजपत्र, ताम्रपत्र और सुवर्णपत्र आदि प्रसिद्ध प्रकार है। वर्तमान में यह हस्तलिखित ग्रंथ मुख्यतः ताडपत्र, भूर्जपत्र और कागज के रूप में उपलब्ध होते हैं। गुरु -शिष्य और वंश -परंपरा के क्रम से कण्ठस्थ रुप में सुरक्षित सारा मौखिक ज्ञान हस्तलिखितों के रुप में अभिव्यक्त हुआ और यह हस्तलिखित ज्ञान परंपरा का अभ्युदय ऋषि - मुनियों के पवित्र आश्रमों से हुआ अतः हस्तलिखितों का संरक्षण और संवर्धन आज की आवश्यकता बनी हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय हस्तलिखित परंपरा एवं उनका महत्व इस विषय पर विचार किया गया हैं।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15405696

प्रस्तावना

भारत में गुरू-शिष्य परंपरा हैं। प्राचीन काल में शिष्य गुरुकुल में जाकर अध्ययन करते थे।यह ज्ञान पूर्णतया मौखिक स्वरुप में था। विभिन्न ग्रंथ कंठस्थ करना और गुरुद्वारा प्राप्त ज्ञान हाथ से लिखना यह एक परंपरा थी। इसी को श्रुति-स्मृति परंपरा भी कहते हैं। अर्थात यह ज्ञान श्रुति और स्मृति में ही था। एक युग ऐसा था, जब इस ज्ञान को लिपिबद्ध करना उचित नही माना जाता था। लेकिन समय के साथ साथ ज्ञान की यह विपुल परंपरा को सुरक्षित रखने और उसको भावी पिढीयों तक पहुचाने के लिए यह संपूर्ण कंठस्थ ज्ञान को

लिपिबद्ध करने की जरूरत पडी। उस समय से यह कंठस्थ ज्ञान पत्रो पर लिखना शुरु हुआ अर्थात ताडपत्र, भूर्जपत्र इत्यादि साधनों पर लिखा जाने लगा । हाथ से लिखा गया यह अमूल्य ज्ञान ही `हस्तलिखित` तथा `पोथी` इस नाम से जाता हैं।भारतीय ज्ञान की अतिप्राचीन परंपरा को आज हम तक पहुचानेवाले विभिन्न साधनों में हस्तलिखितों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। वेदों से लेकर पंचतंत्र की छोटी छोटी कथाओं तक जो भी ज्ञान आज उपलब्ध हैं, वह हजारों सालों से इन हस्तलिखितों में विद्यमान हैं। वे भाषा, दर्शन, कला, विभिन्न शास्त्र, पुराण के साथ साथ भारतीय सभ्यता और उसकी भव्यता को दर्शाते हैं। इसिलिए हस्तलिखित भारत के इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत हैं । भारत में विभिन्न मठ, मंदिर, संस्था, गुरुकुल, धार्मिक स्थल ऐसी जगहों पर हस्तलिखित मिलते हैं।

हस्तलिखित- व्याख्या एवं स्वरुप -

हस्तेन लिखितम् इति हस्तलिखितम् । अर्थात हाथ से लिखे गए दस्तावेज को हस्तलिखित कहते हैं।राष्ट्रीय पांडुलिपी मिशन के अनुसार,'पांडुलिपि कागज, छाल,धातु,ताड के पत्ते अथवा किसी अन्य सामग्री पर कमी से कम ७५ वर्ष पहले हस्तलिखित संयोजन को कहते हैं, जिसका वैज्ञानिक, ऐतिहासिक अथवा सौंदर्यपरक तत्व हो।'

आङ्ग्ल भाषा में यह Manuscript शब्द से प्रसिद्ध है। Manus का अर्थ है -हाथ से और script का अर्थ है -लिखना अर्थात् हाथ से लिखे गए दस्तावेज ही हस्तलिखित कहे जाते है। इन ग्रन्थों को MS या MSS इन संक्षेप नामों से भी जाना जाता है।हिन्दी भाषा में यह पाण्डुलिपि, हस्तलेख, हस्तप्रति इत्यादि नामों से प्रसिद्ध है।

हस्तलिखित लेखन के साधन-

आज हमें सर्वाधिक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ भोजपत्र और ताडपत्र पर लिखी हुई प्राप्त होती हैं। हस्तलिखित लिखने के लिए ताडपत्र, भूर्जपत्र, कपडा, पट, चमडा, काष्ठ, कागज ऐसे विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता था।इसमें निम्नलिखित साधन आते हैं-

१)ताडपत्र-ताड वृक्ष दक्षिण में समुद्र तट के प्रदेशो में विशेष रूप से पाए जाते हैं।टिकाऊ होने के कारण तथा कम मूल्य में प्राप्त हो जाने के कारण ताड के पत्ते पुस्तक आदि लिखने में ज्यादातर उपयोग में लाए जाते थे।सातवी शताब्दी में स्कंदपुराण और नवम शताब्दी में लंकावतार नामक किताब ताडपत्रो पर लिखी गई थी ,ऐसा उल्लेख मिलता हैं।

२)भूर्जपत्र-भूर्ज नामक एक वृक्ष हैं, जो अधिकांश हिमालय में उपलब्ध होता हैं । इसकी भीतरी छाल का उपयोग लिखने के लिए होता था।भूर्जपत्र से निर्मित ग्रंथ को पुस्तक, पुस्त या पोथी कहा जाता हैं। महाकवि कालिदास ने अपने ग्रंथ कुमारसंभवम् महाकाव्य में प्रेमपत्र लिखने के लिए भूर्जपत्र तथा धातुओं के संमिश्रण से बनी स्याही का उल्लेख किया हैं-

" न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र भूर्जत्वचः कुञ्जराबिन्दुशोणाः ।

व्रजन्ति विद्याधरसुन्दरीणामनङ्गलेखक्रियोपयोगम् " ॥ (कु-१.७)

३)कपडा-प्राचीन काल में रुई - सूती कपडा तथा रेशम का कपडा लिखने के लिए प्रयोग में लाया जाता था।पट्टा, पट्टीका तथा करपट्टीका जैसे विशेष नामों का प्रयोग ऐसे कपडों के लिए किया जाता था।

४)चमडा-भारत में धार्मिक दृष्टि से चमडा अपवित्र माना जाता था।परंतु चमडे पर लिखने के कुछ संदर्भ मिलते हैं। सुबंधु विरचित वासवदत्ता के एक प्रकरण में चमडे पर लिखने का संकेत हैं।

५)काष्ठ-भारत में पाठशाला तथा गावो में पूर्व विद्यार्थी लकडी के पाटो पर लिखते थे।दंडी के दशकुमारचरितम् में इस बात का उल्लेख मिलता हैं कि, अपहारवर्मन् ने सोए हुये राजकुमारों के नाम अपनी घोषणा एक रोगन लगे फलक पर लिखी थी। (दश.कु.-द्वितीय उच्छवास

६)कागज -आठवी शताब्दी में संस्कृत -चिनी शब्दकोश में 'त्सी 'शब्द का अर्थ कागज बताया गया है। आज अधिकांश हस्तलिखित ग्रन्थ हमें देसी हाथ के बने कागज पर लिखे हुए मिलते है।ऐसा माना जाता है कि, कागज को सर्वप्रथम मुगल भारत में लाए। चीन ने 105 ईस्वी में सर्वप्रथम कागज का निर्माण किया। किन्तु उसकी निर्यात बहुत कम थी, इसलिए दुसरे देश बहुत समय तक उसके लाभ से वंचित रहे। भारत में देसी हाथ के कागज पर हस्तलिखित ग्रन्थ आठवी -दसवी शताब्दी ईस्वी में लिखी जाने लगी थी।

७)स्याही -लिखने के लिए जो स्याही प्रयोग में लायी जाती थी, उसमें काली स्याही, पीली स्याही, लाल स्याही के साथ साथ सोने और चान्दी की स्याही के भी उल्लेख प्राप्त हुए है।

लिखने की उपकरणिका का नाम लेखनी है। पेन्सिल, कलम ये भी लेखनी के रुप है। इसके अतिरिक्त तूली, तूलिका, शलाका आदि शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। दशकुमारचरितम् में 'वर्णवर्तिका 'शब्द का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ 'रंगीन पेन्सिल 'ऐसा माना गया है।

हस्तलिखित - भारत की धरोहर -

प्राचीन संस्कृति और सभ्यता, ज्ञान और शिक्षण, धर्म और तत्वज्ञान इनका प्राथमिक और मूल स्रोत हस्तलिखित है। केवल प्राचीन परंपरा के संदर्भ में ही नही अपितु मध्ययुगीन और आधुनिक युग के संदर्भ में भी हस्तिलिखितों का अपना अनन्यसाधारण महत्व रहा है। सामाजिक कल्पना, ज्ञान इनके संक्रमण के लिए हस्तलिखित प्रभावशाली माध्यम बने है और भारतीय वाङ्मयीन, भाषाविषयक, सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत संरक्षित करने के लिए भी हस्तलिखितों का उपयोग होता है।भारतीय साहित्य के परम अनुरागी जर्मनदेश के विद्वान् मैक्समूलर (१८२३-१९००) ने अपनी पुस्तक '(भारत से हम क्या ले सकते है)इसमें कहा है कि, "सारे संसार में ज्ञानियों और पण्डितों का देश भारत ही एकमात्र ऐसा है जहां कि विपुल ज्ञानसंपदा हस्तलिखित ग्रन्थों के रुप में सुरक्षित है। "

हस्तलिखित संरक्षण का कार्य -

भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों, मठो, मन्दिरों, व्यक्तिगत घरों, संस्कृत की दिशा में कार्य करनेवाली संस्थाओं के हस्तलिखित अभी तक प्रकाशित नही हुए है। केन्द्रिय सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकार की ओर से इस बहूमूल्य ज्ञान संपदा को शीघ्रातिशिघ्र संरक्षण देने तथा उसका उद्धार करने के लिए योजनाबद्ध कार्य हो रहे है। आरम्भ में हस्तलिखित ग्रन्थों का संरक्षण 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी ' के द्वारा शुरु हुआ। आज इस कार्य में 'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन' (National Mission For Manuscripts) का महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय स्थान है।

'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन' (Namami) की स्थापना भारत सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय ने सन् २००३ के फ़रवरी माह में की । इसका उद्देश्य भारत की विशाल पाण्डुलिपि संपदा को खोजना एवं उसको संरक्षित करना है।

प्राचीन भारतातील हस्तलिखित ग्रंथालय :-

१) नालंदा विश्वविद्यालय ग्रंथालय

२) तक्षशीला विश्वविद्यालय ग्रंथालय

३) विक्रमशीला विश्वविद्यालय ग्रंथालय

४) नागार्जुन विद्यापीठ ग्रंथालय

वर्तमान हस्तलिखित ग्रंथालय :-

१) सरस्वती महाल ग्रंथालय, तंजावर

२) गव्हर्नमेंट ओरिएंटल हस्तलिखित ग्रंथालय, मद्रास

३) अड्डयार ग्रंथालय, चेन्नई

४) ओरिएंटल संशोधन संस्था और हस्तलिखित ग्रंथालय, केरळ विद्यापीठ, थिरुवनंथपुरम

५) ओरिएंटल संशोधन संस्था, म्हैसूर

६) एशियाटिक सोसायटी ग्रंथालय, कलकत्ता (कोलकाता)

उपसंहार :-

इस तरह से भारतीय हस्तलिखित परंपरा ने पुरे विश्व को सुसज्जित और समृद्ध किया है। भारत में विभिन्न मठों, मन्दिरों, विश्वविद्यालयों, धार्मिक संस्थानों ने और कुछ विद्वान् जनों ने यह हस्तलिखित परंपरा सुरक्षित रखने के लिए और संवर्धित करने के लिए अथक प्रयास किए है।उन सब ज्ञानी जनों का संशोधक शतशः ऋणी है।

संदर्भसूचि -

१) कुमारसंभवम्, कालिदास, चौखम्बा प्रकाशन
२) Introduction to manuscriptology – डॉ. आर. एस. गणेशमूर्ती
३) भारतीय अभिलेखशास्त्र, पुरालिपिशास्त्र एवं कालक्रमपद्धति, डॉ. अनिता शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन
४) संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन
५) राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (विकिपिडिया)
६) पाण्डुलिपि (विकिपिडिया)